INDIAN COUNCIL OF PHILOSOPHICAL RESEARCH (ICPR)
New Delhi

Tender Notice for Type setting of 15000-page manuscript, *Bhartiya-Darshan Brihatkosh*

Last Date of submission of quotation: 5.00 pm, June 10, 2026

Indian Council of Philosophical Research (ICPR) is in possession of a manuscript, titled '*Bhartiya-Darshan Brihatkosh*'. The manuscript, in Hindi and Sanskrit is of 40 volumes, each volume of nearly 380 pages. The manuscript is typed with manual type writer and in legible form.

ICPR is looking for a firm experienced in Hindi & Sanskrit type setting for error-free typing of this 15000 pages (approx.) manuscript as per following specifications:

Sl. No.		
1.	Title of the manuscript	*Bhartiya-Darshan Brihatkosh*
2.	Number of volumes	Forty
3.	Number of pages per volume	380 (Approx)
4.	Total number of pages	15000 (Approx)
5.	Page Size of the manuscript	Legal
6.	Language	Hindi & Sanskrit
7.	Script	Devnagri
8.	Job description	Type setting and submission of error-free soft copy. Typological error in any form will be considered as incomplete job.

9.	Time line	The entire job is to be completed within three months period after the issue of work order.
10.	Payment	ICPR will check the typed matter submitted and on finding that the matter is completely error-free and satisfactory in all respects, payment will be released. Otherwise, the vendor will be liable to act according to ICPR recommendations and resubmit the matter for consideration.
11.	Rate of payment	Rate will be calculated on the basis of per page of original manuscript.

Interested and experienced vendors are requested to quote rate per page for typing of the original manuscript as per specifications as above, including taxes if any.

Submit the quotation in hard copy by 5.00 pm, June 10, 2026 to:

Director (A & F) i/c
Indian Council of Philosophical Research
Darshan Bhawan, 36 Tughlakabad Institutional Area
Near Batra Hospital
Mehrauli – Badarpur Road
New Delhi – 110062

Submit the quotation in a sealed envelope superscribed with (on the top of the envelope) the following line:

"Quotation for the typing of Bhartiya Darshan Brihat Kosh"

Issued with approval from competent authority of ICPR.

S/d

(Director, P&R)
ICPR, New Delhi

§35 §

इति सर्वमितदन्तरङ्गबहिरङ्ग-कारणसामग्री-सन्निधानापेक्षासक्त-स्वरूपम् । §वही§

अर्थात् उक्त छहों का अन्तरङ्ग एवं बहिरङ्ग कारणसामग्री के सान्निध्य की अपेक्षा से स्वरूप उत्पन्न होता है । तात्पर्य यह कि वस्तुसत् का समुत्पाद न हो कर उस की विशेष अवस्था का उत्पाद होता है जिसे उक्त छह अङ्गों में देखा गया है ।

प्रकुर्वन्ति दशामात्रं हेतवो वस्तुनः सतः ।
राजत्वं राजपुत्रस्य सात्मकस्यैव मन्त्रिणः ।।§वही 5/2/6§

अर्थात् जिस प्रकार जीवितसत् राजकुमार को मन्त्रिगण राजत्वपदवी देते हैं उसी प्रकार सत् वस्तु के दशामात्र का समुत्पाद कारणसामग्री से होता है ।

सांख्ययोग के सत्कार्यवाद में कारणगत सत् कार्य का उत्पाद माना गया है किन्तु यहाँ वस्तुसत् की अवस्था का उत्पाद स्वीकृत है । परिणाम और प्रतीत्य-समुत्पाद में यही अन्तर है । सत्कार्यवाद में द्रव्य अविनाशी है किन्तु सर्वास्तिवादी उसे विनाशी मानते हुए भी अध्वत्रय में सत् स्वीकार करता है-

न च नो द्रव्यं विनश्यतीत्युक्तम् । यदेतद् द्रव्यं पूर्वानुभूतं तदेव तत्स्मृत्या गृह्यते । §वही 5/307 भाष्य§

अर्थात् द्रव्य का विनाश स्वीकृत है किन्तु पूर्वानुभूत द्रव्य का स्मृति से ग्रहण होता है, अतः वह अतीतरूप से विद्यमान माना गया है । इसी प्रकार---

विद्यमानस्य खलु अनागतस्य वस्तुनोतीत-प्रत्युत्पन्न-सहकारिकारण-सामग्री-परिगृहीतस्य शक्तिमात्रमाविर्भवति ।
§वही 5/308 भाष्य§

अर्थात् अनागत वस्तु भी वर्तमानरूप से ग्राह्य है, अतः अतीत तथा प्रत्युत्पन्न कारणसामग्री से उस के शक्तिमात्र का आविर्भाव होता है । विनाशी होते हुए भी वस्तुसत् की तीनों अध्वाओं में सत्ता सिद्ध है---

सदतीतासमुत्पन्नं बुद्धोक्तेर्वर्तमानवत् ।
धी-नाम-गोचरत्वाच्च तत्सत्त्वं वर्तमानवत् ।।§वही 5/305§

अर्थात् बुद्धवचनों के अनुसार अतीत तथा अनागत वर्तमान के समान ही सत् हैं, अत एव वे बुद्धिविषय बन कर शब्द द्वारा वाच्य होते हैं ।

---oo---